Nagarjuna Degree College
38/36, Ramagondanahalli,
Yelahanka Hobli.
Bengaluru - 560 064.

33303

Reg. No.

III Semester B.Sc./B.S.F.A./B.S.I.D./B.S.R.S./B.V.A.M./B.V.A.P./B.V.C.P./ B.V.G.A./B.V.I.S./B.V.P.D./B.V.P.T./B.V.S.P. Degree Examination, March/April - 2022

HINDI

Natak, Vigyapan Lekhan Aur Sankshiptikaran

(CBCS Semester Scheme Freshers and Repeaters 2019-20 Onwords)

Paper - III

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 70**

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। **(10×1=10)**

1) 'सिंहासन खाली है' नाटक के रचनाकार कौन है?

2) सुपात्र की तलाश कौन कर रहा था?

3) वचनबद्ध राजा किस पर बैठ सकता है?

4) पुरूष क्या फिनिश करके आया था?

5) 'कालोनी सुंदरी' प्रतियोगिता में किसने फस्ट प्राइज जीता था?

6) प्रजा के सुख के लिए क्या खाली हो गया?

7) ईश्वर का अंश किसमें होता है?

8) धरती पर स्वर्ग उतारने की बात कौन करता है?

9) सदियों से यन्त्रणा कौन भोग रही थी?

10) पुरूष के अनुसार नारों के पुल पर चलकर क्या पाया जा सकता है?

II. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **(2×7=14)**

1) अगर मरने के बाद ही सुख मिलेगा, तो मैं आपके मरने का प्रबन्ध भी कर दूँगा।

2) देख लिया तुम लोंगो ने! यह क्षुद्र मनुष्य ईश्वर के आदेशों को झूठा कह रहा है। क्या यह नास्तिक नहीं है?

3) मैं कहती हूँ तुम्हें कब अक्ल आएगी? अब अकेले मेरी तनख्वाह पर कैसे चलेगा महिने–भर का खर्च?

[P.T.O.

III. 'सिंहासन खाली है' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (1×16=16)

(अथवा)

'सिंहासन खाली है' नाटक में दरशाये गए देश की राजनीति के यथार्थ रूप का चित्रण कीजिए।

IV. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (2×5=10)

1) महिला।

2) नेता।

3) सूत्रधार।

V. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर विज्ञापन तैयार कीजिए। (1×10=10)

1) मोबाईल।

2) टैक्सटाइल्स (Textile)

VI. निम्नलिखित अनुच्छेद का सक्षिप्तिकरण करके एक उचित शीर्षक दीजिए। (1×10=10)

किसी भी विकासशील देश के सम्मुख अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याएँ उपस्थित होना स्वाभाविक है। भारत की स्थिति तो इस संवंध में और भी विषम है। क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से हमारा देश जितना विशाल है, उत्पादन–साधनों और आर्थिक स्रोतों की दृष्टि से उतना ही यह देश अभावग्रस्त है। प्राचीन समय में भारतीय अधिकार गाँवो में रहते थे। हर गाँव अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने में आत्मनिर्भर होता था। अधिकांश लोग कृषि करते थे। शेष लोग बुनकर, खाती (लकडी का काम करनेवाले), लुहार, कुंभार, दर्जी, मोची आदि के रूप में अपना – अपना व्यवसाय करते थे । पिता का व्यवसाय पुत्र अपना लेता था। इस प्रकार ग्रामीण समाज की आजीविका का क्रम एक निश्चित सीमा में चलता रहता था। उसमें किसी प्रकार का बाहरी हस्त–क्षेप नहीं होता था। परंतु धीरे–धीरे स्थिति बदल गई। विदेशी शासकों ने अपने स्वार्थ के लिए यहाँ के अर्थतंत्र को तोड़ा। कुछ लोगों को सरकारी नौकरी का आकर्षण देकर अप्ना नुमाइंदा बना लिया गया। उनकी देखा–देखी अन्य लोग भी अपने–अपने पैतृक व्यवसाय को छोड़कर कस्बों की ओर भागने लगे। गाँवो की स्वावलम्बी अर्थ व्यवस्था टूटने लगी। जब–जब शासकों को कोई युद्ध जीतने के लिए या अपना उद्धेश्य पूरा करने के लिए सैनिकों या कर्मचारियों की आवश्यकता पड़ती थी, तब–तब बहुत से लोगों को अच्छा रोज़गार मिल जाता था। परंतु स्थिति बदलते ही वे सभी लोग बेकार हो जाते थे। गाँव में लौटकर वे अपना पुराना व्यवसाय अपनाने में लग जाते हैं और शहरों में कोई रोज़गार मिलता नहीं था। इस तरह बेरोज़गारी भारतीयों के लिए एक समस्या बनने लग गई।